

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.

The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website

https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

CC-0. In Public Domain. Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

श्रीगोशायनमः। अश्रासीणीमतमंत्रसे अख्यते। श्रीधनंतरयेनमः।। यागवणरणमुखनुननेकनारं हलाचकार्जगतः परमोपकारमः। यं ब्रालचानिद्धिरपरतीपिपारं ते नौमिमेश्विलसुनाह हये कहारं। भाग नाराकेलफलेषुनं दुल जलंक्षीरं सालिहितं जंबी ग्रेश्यरसे। घते स मुचितः सर्पिस्त्रं नापले।। गोध्मेषुचंक के दीहिततमामासारा। नकां जिके।। नारंगगुङ इसणं निगदिनं पिंडा लुके को दवं।। शे। पिश्रा ने सालिलं प्रियाल फल जेपच्याहितामाष्ट्र संबंडं श्रीर जवसन अमुचितं को छो बुको लातं जे।। शेम त्या प्रलेख की जी शमनंम धं बंपाना यये।। ते लंपोष्ठ र ते कड़ प्रश्राम नंशो शां। का बुध्या जये त्राह्म। फन से कह लंक दलेच घत्र प्रत्या प्रतिधामिपिनं लरसा।। नह पह वशा तिकरेलवणा लवणे खु चतं हलवा रिवरं गढ़।। ना रिके

Ace.No. 12+2 M822
2100 - 210101 FT HORFCHROOM - OTRAPIZET

OTO - 2101.1777-2100 H2 1699.

GOULD - 3117072.



डेमक्र भारत्वाहर मिक्टर

ने वफलतालबीनयाः पाचनंसपिरतं दुलंबिद्धः ॥तेवदंतिस्वयोधनंदुलान्सीर्वारिपरिण न्येदिति॥पादािरमामलकनालतीदुकीबीनधुरलवलीफलानिचाबाकुलनचफले नपाचयेगाकमितिबकुलंखमलतः॥शामधूक्षमात्हरं नुपादनौनाप रूष प्यत्रेरकि कि स्कानां॥पाकाय प्यंपिच मंदबीनं स्निपनके पितदेवदेयं।।।।।। मुणालक चरिक हारहाराक सेर्स्थणालक चरिक सामाणालक चरिक सामाणालक चरिक सामाणालक चरिक सामाणालक चर्चित्र प्राप्त प्र

इंट्रिली १

यर्करायवितीद्वतीप्रलाजीरकं जर्यनीद्वाकुं लंपाचयन्मधुरिकाकियकं ॥रभापनितीद्वतीप्रलाजीरकं जर्यनीद्वाकुं लंपाचयनमुरिकाकियकं ॥रभापनित्वतीप्रलाजीर्यने विवाजकं। मकलमणुदितानुदिनं प्रलंभपच विवाजकं। मक्स नंकि पितिद्वतं। १४ ॥ स्मार्थके प्रमापके प्रमापके प्रमापके प्रमापके प्रमापके प्रमापके प्रमापके प्रमापके । १५ १ प्रमापके । १५ प्रमापके । १५

नाम निवास न

रः॥ इरा अलखरापानं नवुरु सम्हादितपाठः॥ वरोने सवारा ल्वेगन पितासमे पूर्व रः राज्यनी जैने याति॥ माम्लने ल्युका पूर्ण विपक्षे अने क्षमुद्धी में उयोध्य ॥ उधाधा विद्वा धार्मा विद्वा धार्मा विद्वारा कि

तकु दिन वारि।।रालार्वं ध्रमगरेष्ठक्र संधानि मले पाति विरेचनार्ने।।धरे यव ११ प्रजातिक ने छने स्वार प्रशासका स्वार विष्टुः।। स्ववक तेषु गरे स्वयकारे यस्त्र के मार्द्रका स्वतः।। स्वयाम स्वार स्वार मार्द्रका स्वार स्व

गुरमधुकां जिक्तन्य विभागातस्य वि गुणारत्त यथात्तरमेते। चिणिदिनानीवधा गुरमधुकां जिक्तन्य पितमेत दुषं ति हिस्तां ॥पशास्त्र सुक्ष मिण जिल्ले हिस्तां ॥पशास्त्र सुक्ष मिण जिल्ले हिस्ता ॥ विम्हिता मनव्यप्यात्री का चिना धनि जिल्ले सुक्ष स्वार्थ ॥स्तु ही जता प्याने ती जामनव्यप्यात्री का चिना धनि ज्ञास स्वार्थ ॥ स्तु ही जानि ग्या के या कि या कि मानि शामने १६ एए। आहे का विकास के स्वार्थ से स्वार्थ ॥ शामने १६ एए। आहे का विकास के समाप्त ॥ अने १६ एए। आहे का विकास के समाप्त ॥ अने १६ एए। आहे का विकास के समाप्त ॥ अने १६ एए। आहे का विकास के समाप्त ॥ अने १६ एए। आहे का विकास के समाप्त ॥ अने १६ एए। आहे का विकास के समाप्त ॥ अने १६ एए। आहे का विकास के समाप्त ॥ अने १६ एए। आहे का विकास के समाप्त ॥ अने १६ एए। आहे का विकास के समाप्त ॥ अने १६ एए। आहे का विकास के समाप्त ॥ अने १९ एए। आहे का विकास के समाप्त ॥ अने १६ एए। आहे का विकास के समाप्त ॥ अने १६ एए। आहे का विकास के समाप्त ॥ अने १६ एए। आहे का विकास के समाप्त ॥ अने १६ एए। आहे का विकास के समाप्त ॥ अने १६ एए। आहे का विकास के समाप्त ॥ अने १६ एए। आहे का विकास के समाप्त ॥ अने १९ एए। अने

```
[OrderDescription]
,CREATED=22.10.20 11:50
,TRANSFERRED=2020/10/22 at 11:52:21
,PAGES=5
,TYPE=STD
,NAME=S0004364
,Book Name=M-822-ANIVAMRITMANJARI
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
```